Class - 8
Subject - HINDI
पाठ – 7 राष्ट्र की मर्यादा (एकांकी) – रत्नचंद्र शर्मा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. हारकर शत्रु को कोसना मूर्खता है – पोरस ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर हारकर शत्रु को कोसना मूर्खता है – पोरस ने ऐसा इसलिए कहा कि वह राजा के कर्तव्य से भलीभाँति परिचित था। किसी भी राजा को अपने देश की सुरक्षा के प्रति सावधान रहना पड़ता है। शत्रु हमेशा अवसर की ताक में रहता है। अवसर का लाभ उठाना ही उसका उद्देश्य होता है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह मूर्ख ही कहलाएगा। शत्रु से असावधान राजा हार जाने के बाद यदि उसका दोष शत्रु पर मढ़ता है तो यह उसकी मूर्खता ही कही जाएगी।

ख. सामंत युद्ध को टालने की बात क्यों कर रहा था?

उत्तर सामंत सिकंदर की वीरता से, उसकी विशाल सेना के साथ अपने देश की सेना की क्षमता से परिचित था। वह जानता था कि यदि युद्ध होगा तो भयंकर नरसंहार होगा। अपने देश को उस नरसंहार से बचाने के लिए ही वह युद्ध को टालने की बात कर रहा था।

ग. पोरस ने सिकंदर को बंदी बनाने की अपेक्षा सुरक्षित उसके शिविर तक क्यों पहुँचा दिया?

उत्तर पोरस ने सिकंदर को बंदी बनाने की अपेक्षा सुरक्षित उसके शिविर तक पहुँचा दिया क्योंकि वे भारतीय संस्कृति और राष्ट्र की मर्यादा की रक्षा के लिए सचेष्ट थे। यहाँ अतिथि राजदूत को यथासंभव बंदी नहीं बनाते और न ही उसका वध करते हैं। भारतीय धर्मग्रन्थों में भी इसके प्रमाण मिलते हैं।

3. लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. सिकंदर कहाँ से और भारत क्यों था?

उत्तर सिकंदर मकदूनिया से भारत पर विजय प्राप्त करने की इच्छा से आया था। वह इसे अपने अधीन करना चाहता था।

ख. सेनापति ने सिकंदर के किस कार्य को वीरोचित नहीं बताया?

उत्तर सेनापति ने सिकंदर द्वारा छल से डेरियस के दुर्ग को वश में करने के कार्य को वीरोचित नहीं बताया। उसने ईरान, गांधार आदि पर भी अनुचित ढंग से विजय प्राप्त किया था।

ग. पोरस ने सिकंदर की मित्रता को क्यों अस्वीकार कर दिया?

उत्तर पोरस ने सिकंदर की मित्रता को अस्वीकार कर दिया। इसका कारण उनका अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम था। वे अपनी मातृभूमि को, अपने राष्ट्र को धोखा नहीं देना चाहते थे। राजद्रोह उन्हें स्वीकार नहीं था। सिकंदर से मित्रता की स्थिति में भारत विदेशियों से पददलित होता।

घ. महाराज पोरस ने राजदूत के लिए सोने और हीरे की रोटी क्यों बनवाई थी?

उत्तर महाराज पोरस राजदूत को यह बताना चाहते थे कि सोने और हीरे की रोटी से पेट की भूख शांत नहीं होती। पेट की भूख अन्न की रोटी से मिटती है। अतः सिकंदर का सोने और हीरे के पीछे भागना, मार–काट मचाते हुए एक देश से दूसरे देश में भटकना उचित नहीं है। इसी कारण उन्होंने सोने और हीरे की रोटी बनवाई थी।

ङ महाराजा पोरस ने सिकंदर को बंदी न बनाकर उचित कार्य किया अथवा अनुचित?
तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर महाराजा पोरस ने सिकंदर को बंदी न बनाकर उचित कार्य किया था। अपने इस कार्य से उन्होंने भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा का पालन ही किया था। इस प्रकार उन्होंने अपनी मातृभूमि और राष्ट्र को गौरव प्रदान किया था।

इतिहास साक्षी है कि यहाँ दूत को अबध्य माना जाता रहा है। उसे बंदी भी नहीं बनाया जाता। रामायण तथा अन्य पौराणिक ग्रंथ में भी इसके प्रमाण मिलते हैं। सिकंदर राजदूत बनकर ही आया था। अतः उसे बंदी न बनाना उचित था। अवसर का लाभ उठाया जा सकता था किंतु उससे मातृभूमि और यह राष्ट्र कलंकित हो जाता।

च. महाराजा पोरस के किन्हीं तीन गुणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर महाराजा पोरस के तीन गुण हैं –

1. वीरता – महाराजा पोरस वीरता की प्रतिमूर्ति थे। एक वीर व्यक्ति ही अपने से शक्तिशाली से भी लोहा लेने के लिए तैयार रहता है। वह शत्रुओं को पीठ नहीं दिखाता, उसका सामना करता है। पोरस राष्ट्र की मर्यादा को बनाए रखने के लिए सिकंदर से युद्ध करने के लिए तत्पर दृष्टिगत होते हैं।

2. राष्ट्रभक्ति – पोरस में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति की भावना कूट–कूटकर भरी हुई थी। राष्ट्र की मर्यादा बनाए रखने के लिए, राष्ट्र के स्वाभिमान एवं सम्मान के लिए वे सिकंदर से मित्रता की बात अस्वीकार कर देते हैं। चाहते तो सिकंदर की मित्रता को स्वीकार कर सुखद जीवन जी सकते थे किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

3. स्पष्ट वक्ता – सिकंदर को पहचान लेने पर भी दूत के रूप में उसने जो कहा, पोरस ने उसे सुना और बेबाकी से अपना निर्णय भी दिया। आतिथ्य धर्म का पालन करते समय उन्होंने हीरे और सोने के प्रति उसकी भूख को ध्यान में रख एक स्पष्ट संदेश उसे दिया। इतना ही नहीं उन्होंने उसे सुरक्षित उसके शिविर तक पहुँचाने की व्यवस्था भी कर दी।

.

4. मूल्यपरक प्रश्न

क. क्या सिकंदर महान वास्तव में पोरस से मित्रता करना चाहता था? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर सिकंदर महान वास्तव में पोरस से मित्रता नहीं चाहता था। मित्रता की आड़ में वह उसकी मदद लेकर मगध जैसे विशाल राज्य को और अन्ततः भारत को अपने अधीन करना चाहता था।

मित्रता किसी के कहने से नहीं परस्पर विश्वास और प्रेम से उपजी आंतरिक भावना है। इसमें स्वार्थ नहीं होता। एक–दूसरे के प्रति हित की भावना होती है। सिकंदर की मित्रता का प्रस्ताव स्वार्थपूर्ण था।

ख. भारतीय आचार्य शासकों को संतोष का पाठ क्यों पढ़ाते हैं?

उत्तर भारतीय आचार्य शासकों को संतोष का पाठ इसलिए पढ़ाते हैं कि संतोष धारण करने वाला शासक अनावश्यक स्वार्थ का शिकार नहीं होगा। ऐसे में वह अपनी प्रजा और देश के उत्थान का प्रयास करेगा। उसका शासन लोककल्याण की भावना से प्रेरित होगा। वह अपने बारे में न सोचकर समस्त प्रजा के लिए सोचेगा। इससे उसके द्वारा जनहित के कार्य संभव होंगे।

5. सही विकल्प के सामने शुद्ध (✓) का चिह्न लगाइए –

क. पोरस कहाँ का शासक था?

यूनान का | जेहलम का | चित्तौड़ का

उत्तर यूनान का

ख. सिकंदर कौन था?

पोरस का सेनापति | पोरस का सामंत | यूनान का महान विजेता

उत्तर यूनान का महान विजेता

ग. सिकंदर ने डेरियस के दुर्ग को कैसे वश में किया?

धन से | साहस से | छल से

उत्तर छल से

घ. दूत के रूप में कौन आया था?

पोरस | सिकंदर | अमात्य

उत्तर सिकंदर